समाजशास्त्रीय निकष पर कमल कुमार के कथा-साहित्य का अनुशीलन

पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

शोधार्थी

रेखा गुप्ता

Registration No. : TZ203858 of 2021

मानविकी एवं समाजविज्ञान विद्यापीठ

हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

तेजपुर, असम 784028

नवम्बर 2023

उपसंहार

हिन्दी में कथा साहित्य की आलोचना अपने प्रारंभिक स्तर से लेकर सामाजिक व्यवहार से गहरे स्तर पर जुड़ी होती है। युगीन हलचलों, वैचारिक द्वन्द्वों, सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-धार्मिक-नैतिक- राष्ट्रीय विचारों के सापेक्ष आलोचना के स्वरूप में भी व्यापक एवं महत्वपूर्ण बदलाव हुआ है। हिन्दी आलोचना रचनात्मक साहित्य के नवीन सृजन, नवीन विचारधाराओं एवं नवीन सामाजिक सरोकारों से टकराता है। इस प्रकार यह विविध दृष्टियों, प्रतिमानों और प्रवृत्तियों से मुक्त होती रहती है। समाजशास्त्रीय आलोचना वर्तमान सन्दर्भ में नयी आलोचना से प्रभावित दिखाई पड़ती है। यह एक समाजशास्त्रीय एवं कथा साहित्य के तत्व से जोड़ती है। साहित्य समाज को अभिव्यक्ति के रूप में मानता है। यह नई आलोचना की मूल प्रवृत्ति को जटिल बनाता है जो केवल भावात्मक प्रतिक्रिया या लेखक के इरादों पर विचार किये बिना एक रूचिपूर्ण पाठ पढ़ने की मांग करता है जबकि प्रभावशाली प्रतिक्रिया और आधिकारिक इरादे से बचते हैं। वह विशेष रूप से कला और साहित्य के टुकड़ों का समाज एवं सामाजिक व्यवहार के व्यवस्थित प्रतिबिम्ब के रूप में मानते हैं। वह समझता है कि किस तरह से इन कलाकृतियों को काम के माध्यम से रणनीतिक रूप से नियोजित करने के लिए प्राप्त किया जाता है।

कला–साहित्य का भी समाजशास्त्र होता है लेकिन इसे विशुद्ध समाजशास्त्रीय मानने को तैयार नहीं हैं। वे इसे समाजशास्त्र की एक शाखा मानते हैं तो दूसरी ओर ऐसे साहित्यसलोचक भी है जो साहित्य के समाजशास्त्र को इसलिए नहीं स्वीकारते क्योंकि इसका सीधा सम्बंध बाजारू साहित्य से है। एक तीसरी स्थिति वह भी है जहाँ साहित्य और समाजशास्त्र के अन्तःसम्बंध और उसके प्रभाव एवं उपयोगिता को समझने तथा स्वीकारने वाले विद्वान

अपने अपने ढंग से पहल करते हैं। वास्तविकता यह है कि साहित्य के गम्भीर - मूर्धन्य आलोचकों ने जिसे बाजारू

सस्ता एवं सतही तथा चालू किस्म का साहित्य मानकर उसे हाशिये पर रखा, उसका उत्पादन विक्रय और लोकप्रियता बहुत अधिक है। यहाँ सवाल यह है कि ऐसा साहित्य अपने उपभोक्ताओं की किन आवश्यकताओं या उद्देश्यों की पूर्ति करता है तथा उसका भी कोई अपना साहित्यशास्त्र है या सौन्दर्यशास्त्र या समाजशास्त्र होता है। साहित्य का समाजशास्त्र समाज और साहित्य की पृष्ठभूमि और दोनों के बीच के सम्बन्धों की पड़ताल एवं व्याख्या करता है। साहित्य की विविध विधाओं की अपनी विशिष्ट प्रकृति, रूप - संरचना, शब्दावली, शैली होती है। इसलिये उसके अनुरूप समाजशास्त्रीय विवेचना करना चाहिए। साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन सावधानीपूर्वक करना चाहिए ताकि साहित्य के विविध रूपों और विधाओं का समाजशास्त्र एक जैसा नहीं हो सके। रचना का समाजशास्त्रीय विवेचन करते समय उसकी प्रकृति की परख जरूरी है। रचना का ऐसा समाजशास्त्र जो उसके सामाजिक महत्व का विश्लेषण करें लेकिन उसके कलात्मक सौन्दर्य पर ध्यान न दे। वह अधूरा होगा। इस बात को हम उपन्यास के विकास एवं लेखन में सामाजिक, भौगोलिक, आर्थिक पहलुओं के योगदान से समझ सकते हैं।

हिन्दी कथा साहित्य में भी पूरी गम्भीरता के साथ इस समस्या को उठाया गया है। परिवार, पड़ोसी, रिश्तेदार या अन्य विश्वासपात्रों के द्वारा किये गये इस अपराध की व्याख्या के साथ इसके कारण बच्चों पर पड़ने वाले तात्कालिक तथा दूरगामी दुष्प्रभावों की भी चर्चा की गई है। जैसे- कमल कुमार की कहानी 'नहीं बाबूजी नहीं' तथा नासिरा शर्मा की कहानी 'बिलाव' में नशे में धुत पिता ही अपनी पुत्री के साथ दुराचार करता है । सगे पिता के साथ जब पुत्री सुरक्षित नहीं तो सौतेले पिता का कहना ही क्या ? सौतेले पिता की कुदृष्टि की शिकार शबनम (शबनमा – देवेन्द्र सत्यार्थी) उसकी यौन-कुचेष्टाओं से घबराकर घर से भाग जाती है किन्तु

कहीं भी सुरक्षित ठौर-ठिकाना न मिलने के कारण अन्ततः एक वेश्या बन जाती है। साहित्य के प्रति समाजशास्त्रीय दृष्टि रखने वाले विद्वानों ने साहित्य के समाजशास्त्री अध्ययन के लिए प्रतिच्छाया सिद्धांत, नियामक सिद्धान्त को साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन में उसके व्यवहार को दर्शाता है। समाजशास्त्र और साहित्य दोनों मिलकर समाज का समाज में रहने वाले व्यक्तियों का और उनके मध्य बनने वाले सम्बंधों का अध्ययन करते हैं। साहित्य का समाज शास्त्र साहित्य के लिये समाजशास्त्रीय दृष्टि अपनाता है अर्थात् जहाँ साहित्य स्वयं तो साध्य की भूमिका निभाता है किन्तु समाजशास्त्र को साधन की भूमिका में लेकर आता है। इसमें साहित्य ही प्रमुख रूप से उभरता है, क्योंकि साहित्य समाज को लेकर चलता है। साहित्य की रचना समाज के प्राणी रचनाकार ने ही की है और इसलिये रचनाकार का सामाजिक परिवेश और कृति के जन्म लेने में जिम्मेदार सामाजिक परिस्थितियाँ उसी समाज की उपज होती हैं। समाज की शुरूआत से ही समाज को नियंत्रण में रखने के लिये कई मानदण्डों का निर्माण किया गया था। आज कुछ मानदण्डों की सार्थकता समय के साथ-साथ घटती जा रही है। अतः वर्तमान में प्रथाओं, धर्म संस्थाओं और कानून की महत्ता सामाजिक मानदण्डों में सर्वाधिक हैं।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कमल कुमार का नाम जाना पहचाना एवं प्रसिद्ध है। 21वीं सदी की महिला लेखिकाओं में वे अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। लेखिका का लेखन किसी सीमा में आबद्ध होकर नहीं रहता है बल्कि एक व्यापक रूप में दिखाई पड़ता है। उनके बारे में दिनेश द्विवेदी ने लिखा है कि- "कमल कुमार एक सशक्त कथा लेखिका हैं। इस रूप में इन्होंने अपनी पहचान बनाई है। जहाँ इनका कथा पक्ष सशक्त है वहाँ वह अपने दायरे से बाहर भी निकलती हैं नारी सुलभ सीमा इनका लेखन नहीं है। संकीर्ण सीमाओं से परे व्यापक यथार्थ और संघर्ष को आत्मसात करते हुये अभिव्यक्त करती हैं। हिन्दी जगत में उनके द्वारा रचित सम्पूर्ण काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, उपन्यास एवं आलोचना उनके सशक्त लेखन का परिचय देते हैं।

लेखिका किसी भी विषय पर बगैर किसी पूर्वाग्रह के स्वतंत्र रूप से अपने विचार रखती हैं। कमल कुमार का रचना प्रक्रिया उनकी बेबाकी एवं निर्भीकता के कारण कई बार कई प्रकाशकों द्वारा ठुकरा दिया गया है परन्तु कमल कुमार बिना किसी भय के समाज के संवेदनशील मुद्दों पर लिखती रही हैं और विभिन्न प्रकाशकों के पास रचनायें छापने हेतु भेजती रही हैं। उनके द्वारा रचित यह खबर नहीं उपन्यास बहुत बार प्रकाशकों द्वारा ठुकराया गया और अंततः अखिल भारती प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास में कमल कुमार ने सच्ची घटना को आधार बनाकर राजनीति की घटिया चालों पर शिंकाजा कसने का प्रयास किया और अपनी कृति के माध्यम से हिन्दी जगत में प्रसिद्धि का कारण बनीं। इसलिये वर्तमान में कमल कुमार एक महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में सामने आती हैं। उनके लेखन में समसामयिक विषयों के साथ ही आम आदमी के प्रति एक दायित्व व सरोकार भी है। कमल कुमार स्वयं को साहित्यकारों में होती श्रेष्ठता की बहस में न उलझाकर अपने भीतरी लेखकीय व्यक्तित्व को सुरक्षित रखकर साहित्य रचना में निरंतर आगे बढ़ती रहती हैं। उनका प्रथम उपन्यास ही आत्महत्या पर किया गया विस्तृत अध्ययन है। 'अपार्थ' उपन्यास आत्महत्या के विरूद्ध और जीने की नयी दृष्टि को लेकर लिखा गया है। कमल कुमार द्वारा मानवीय रिश्तों के बदलते स्वरूप, मध्यवर्गीय परिवारों के जीवन, संयुक्त परिवरों के विघटित स्वरूप, पितृसत्ता के सामंतशाही शासन, घरेलु हिंसा की शिकार औरतें, अस्तित्व की तलाश में नारी, महानगरीय जीवन के दुष्प्रभाव, मजदूर वर्ग की पीड़ा, धर्म का कट्टरवादी नजरिया, ब्रेन ड्रेन का शिकार भारतीय युवा वर्ग, भौतिकवादी प्रवृत्ति का प्रभाव राजनैतिक दलों की घटिया चालों, भ्रष्ट तंत्र के विकृत स्वरूप नैतिकता के पतन और मूल्यों के ह्रास को लेखिका ने अपने लेखन में स्थान दिया है।

किसी भी लेखन में कोई न कोई पात्र लेखक का प्रतिनिधि होता है। वह उसका बहुत करीबी होता है। उस पात्र के माध्यम से हम लेखक की मानसिकता का परिचय पाते हैं। कमल

कुमार के कथा साहित्य में आए पात्र उनकी मानसिकता के परिचायक हैं। कमल कुमार नारी चेतना की प्रबल पक्षधर हैं। नारी का चेतन होना समय की मांग है क्योंकि अगर वह चेतन नहीं होगी तो वह जिन्दगी में कहीं भी कामयाब नहीं हो सकती है।

कमल कुमार बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उनका साहित्य समाज के सरोकारों से जुड़ा हुआ है। इसीलिए उनके साहित्य में समाज और अपने समय की जिन्दगी का प्रतिबिम्ब झलकता है। समाज में रहने वाले प्राणी अपने व्यवहार से एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। मनुष्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिये समाज में मानदण्ड बनाये गये हैं। कमल कुमार के कथा-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने के लिये जो प्रतिमान निर्धारित किया गया है। उसमें सामाजिक मानदण्डों का महत्वपूर्ण स्थान है। सर्वप्रथम उन सामाजिक मानदण्डों को समझना आवश्यक है, जो मनुष्य के व्यवहार को समाज के अनुकूल बनाने में सहायक बनते हैं। सामाजिक मानदण्डों में विश्व की कई सभ्यताओं में आधुनिकता से पूर्व सामाजिक अवसरों पर ग्रामीण स्त्रियों को रोने के लिये परिवार में बाध्य किया गया है। इससे बड़ी दिलचस्प यह बात है कि उन समाजों ने अपनी स्त्रियों के इस रूदन एवं उनकी सहनशक्ति की प्रशंसा भी की है तो क्या समाज से यह पूछा जा सकता है कि स्त्रियों ने रोने के माध्यम से अपने शिकायती अंदाज में संवाद भी किया होगा? जिसे भारत में बहुत कम देखा गया है । यहाँ स्त्री पुरूष के बीच सामाजिक सांस्कृतिक फांक को समझते हुये मुख्यतः तीन पहलुओं पर विचार किया जा सकता है- (1) विवाह या गवना समारोह में भेंट के वक्त आंसू बहाती स्त्रियों के रूदन संवाद को प्रतिरोध के रूप में देखा जाना चाहिये या परम्परा के अनुपालन के रूप में। (2) मौके बेमौके मुलाकात के वक्त भेंट करती स्त्रियों को भावात्मकता के रूप में देखना चाहिये या कलात्मकता के संदर्भ में ? (3) मृत्यु पर शोक मनाती स्त्रियों के विलाप स्वर को चीख के रूप में देखना चाहिये या करूण भाव की अभिव्यक्ति के रूप में? ये परिवार के रूप में भी जोड़ने का काम करती हैं।

जिससे परिवार या समाज की विविध व्यवहारों का पता चलता है। इन सभी का संदर्भ कमल कुमार के उपन्यासों में बखूबी देखा जा सकता है।

कमल कुमार के उपन्यासों में सामाजिक मानदण्ड का इतिहास सभ्यता के इतिहास की तरह ही प्राचीन है। यह सामाजिक व्यवहार को विनियम करने में मुख्य भूमिका निभाते है। इसके माध्यम से स्वीकृत और विकृत व्यवहार में अंतर किया जा सकता हैं। समाज विकृत व्यवहार को नियंत्रित करते हैं जिससे कि समाज की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाया जा सके। ये आचरण के वो नियम है जिससे व्यक्तियों के व्यवहार को आंका जाता है और स्वीकृत या अस्वीकृत की कोटि में रखा जाता है। समाज में मनुष्यों द्वारा समय-समय पर मानदण्डों का निर्माण किया जाता है। कुछ तो शताब्दियों तक समाज में बने रहते हैं जबकि फैशन और धुन ऐसे सामाजिक निकष हैं जो अल्पकालिक ही होते हैं। सम्पादक रामगणेश यादव ने लिखा है "समाज को बनाये रखने, बिना किसी बाधा के गतिशील रखने, समाज में शांति एवं व्यवस्था बनाये रखने, सभी के व्यवहारों में समानुरूपता लाने तथा समाज में एकता बनाये रखने के लिये जिन नियमों, विनियमों, अधिनियमों, प्रथागत कानून, पारित कानून, जनरीतियों, प्रथाओं, रूढ़ियों और फैशन तथा संस्थाओं की व्यवस्था है उसे सामाजिक प्रतिमान कहते हैं।"

साहित्यकार कमल कुमार ने समाज में मनुष्यों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिये कानून एवं पुलिस प्रशासन, प्रथा, धर्म और संस्थाओं के अंतर्गत परिवार, राजनीति, शिक्षण एवं स्वास्थ्य संस्थाओं का उल्लेख किया है। लेखिका द्वारा जिन सामाजिक निकष को अपने कथा साहित्य में स्थान दिया गया है। उनके विघटित हो रहे स्वरूप का चित्रण उनके कथा साहित्य में किया गया है। कमल कुमार ने कानून के आम व्यक्ति की पहुँच से दूर होने और कानून का उल्लंघन करते संगीन अपराधियों का यथार्थ चित्रण किया है जो कि आज हमारे समाज का सत्य है । पारिवारिक समस्या को लेकर कमल कुमार का साहित्य समसामयिक यथार्थ एवं

आज के स्वार्थ सामाजिक ढांचे से सीधा टकराता है। उनके साहित्य में समाज का सत्य दुनिया के सामने लाने की क्षमता है। उनका साहित्य जीवंतता की मिसाल कायम करता है। उनके साहित्य का फलक विस्तृत है। जिसमें समाज का हर पक्ष समाहित है। उनके साहित्य में समाज में रहने वाले मनुष्य और उसके दूसरे मनुष्यों के साथ सम्बन्धों का जाल अत्यन्त कठिन है। यह कमल कुमार के कथा - साहित्य में वर्णित है। उनके साहित्य में मिलने वाले सामाजिक मूल्यों को विभिन्न पक्षों के अंतर्गत पारिवारिक मूल्य, साहित्यिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रत्येक परिवार में कुछ न कुछ अर्थव्यवस्था जीवन - विवाह के लिये अनिवार्य होती है। यह व्यवस्था आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराती है। जिससे परिवार के सदस्यों का पालन-पोषण होता है। एक सामान्य परिवार या घर में पारिवारिक समस्याएं होती हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पति न तो पत्नी के घर रहता है न तो पत्नी पति के घर बल्कि वे दोनों ही एक नया घर बनाकर रहने लगते हैं। आधुनिक समय में प्रायः पति-पत्नी नया घर बनाकर या लेकर रहने लगते हैं। भारत में प्राचीन इतिहास में परिवार का सुलझा हुआ रूप वैदिक काल में दिखायी देता है। वैदिक परिवार में प्रायः तीन पीढ़ी तक के सदस्य सम्मिलित होते थे। यजुर्वेद के एक मंत्र में पिता, पितामह और प्रपितामह को नमस्कार करते हुये उनसे प्रार्थना की गई है कि वे अपने वंशज को शुद्ध करें । वैदिक परिवार में पितृ परम्परा से सम्बद्ध व्यक्ति ही रहते थे। एक परिवार में रहने वालों का मूल पूर्वज एक पुरूष होता था। समाजशास्त्रियों ने मानव समाज के परिवारों का जिन दो मुख्य भागों में विभाजन किया है वह पितृवंशी परिवार और मातृवंशी परिवार है । इनमें मातृवंशी परिवार की वैदिक साहित्य में स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता है। पितृवंशी परिवार को ही चर्चा अनेक स्थलों पर मिलती है। इस परिवार में स्वाभाविक अथवा कृत्रिम रूप

से बनाये हुये वंशज परदादा, दादा या पिता के अनुशासन में रहते हैं। सामाजिक विधान चाहे कुल की हो किन्तु इस परिवार में मुखिया निरंकुश रूप से शासन करता है।

पारिवारिक समस्या का कारण पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव भी रहा है। जिससे परिवार में विघटन की समस्या उत्पन्न हो गयी है, वह है स्वतंत्रता वो भी अंकुश रहित। इस प्रकार परिवार से सम्बन्धित समस्याओं पर दृष्टि डालने से यही स्पष्ट होता है कि आज के स्त्री पुरुष बौद्धिक और भावात्मक दोनों ही स्तरों पर पुराने मूल्यों को नकार रहे हैं। नये मूल्यों की प्राण प्रतिष्ठा अभी नहीं हो पाई है और संक्रमण कालीन दौर से गुजरते हुये पति-पत्नी, माँ - बाप, भाई- बहन, सास-बहू, पिता-पुत्री आदि सभी सम्बन्ध नाना प्रश्न चिन्हों और जटिलताओं का सामना कर रहे हैं। एक समस्या से अनेक प्रश्न जुड़े हुये हैं और एक प्रश्न के अनेक उत्तर हैं पर अभी तक एक निश्चित उत्तर की तलाश जारी है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अस्तित्वबोध की खोज में आज का मध्य मध्यमवर्गीय परिवार कुंठा एकाकीपन अवस्था, आक्रोश और निरूद्देश्यता जैसे मानसिक विकारों को फैला रहा है। अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने में वह सतत् संघर्ष कर रहा है। विवेच्य युगीन परिस्थितियों द्वारा सामाजिक मध्यमध्यम वर्ग की छोटी-बड़ी सभी समस्याओं को किसी न किसी रूप में पकड़ने की कोशिश की है तथा उन्हें व्यक्तिगत और समाजिक दोनों ही रूपों में चित्रित किया है। मध्यमवर्गीय परिवारों में माँ-बाप, बेटे-बेटियाँ सास- बहू यहाँ तक कि पति-पत्नी संबंधों का अवमूल्यन और विघटन हो रहा है फिर एक नवयुवती विधवा की तो स्थिति ही अलग है। घर या बाहर उसे सहारा चाहिए इसलिए जरा सी रोशी की तलाश में एक जवान विधवा पति की मृत्यु के पश्चात् अनेक प्रश्नों से घिर जाती है। प्रेम सम्बन्ध भी उसे विश्वसनीय नहीं लगते और अलगाव के कटु क्षणों के फैलते हुये भी वह घर से जुड़ना चाहती है। अविश्वास और अनिश्चय की द्वन्द्वात्मक पीड़ा को भोगने वाली यह नारी वैधव्य जनित विरोधाभास में जी

रही है। कमल कुमार की कहानियों में समाजशास्त्रीय निकष पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है जिससे किसी भी एक दौर की समान परिस्थितियों, पृष्ठभुमि और परिवेश के बावजूद रचना मानसिकता का सृजन होता है। हालांकि विषय के धरातल पर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक सन्दर्भ समान हो सकते हैं। किन्तु इनको अभिव्यक्त करने वाले पात्र और अभिव्यजंना शक्ति की पध्दति भिन्न होती है। यहां पर मन सोचने को विवश है कि समान परिवेश एवं युग बोध दृष्टि के बावजूद रचना कर्म स्थूल रूप में समान होते हुये भी सूक्ष्म रूप से एक दूसरे से भिन्न क्यों और कैसे होता है। इस जिज्ञासा के समाधान स्वरूप लेखक के बीच अन्तर्योजन के सूत्रों की पहचान जरूरी हो जाती है। कहानियों के संदर्भ में कमल कुमार नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की पक्षधर हैं। इन्होनें पुरूष की निरंकुशता को ध्वस्त कर स्त्री को अपनी शक्ति खूद पहचानने की बात कही है।

आधुनिक महिला लेखिका में डॉ. कमल कुमार का महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ कमल कुमार की लेखनी का केन्द्रीय बिन्दु प्रमुख रूप से नारी है। और नारी से सम्बन्धित समस्या को अपनी रचना कर्म के माध्यम से समाज के सामने लाने को भरपूर प्रयत्न किया है कभी भारतीय नारी के रूप में तो कभी पाश्चात्य नारी की स्थिति से पाठकों को अवगत कराती है। वह नारी स्वतंत्रता की प्रबल पक्षधर है और उसे हर हाल में अपने पैरों पर खड़ा देखना चाहती हैं। कमल कुमार की देश - विदेश की यात्राएँ उनकी रचनाओं को महत्वपूर्ण बनाती है वे यात्रा के दौरान जो भी चीजें देखी और महसूस की उसे अपने रचना के माध्यम से समाज में रखा। वे लोगों से मिली और उनकी समस्याओं को निकट से देखा, समझा और उसे आत्मसात करके अपनी रचनाओं में उकेरा। इनकी रचनाओं में रूग्ण मान्यताओं के प्रति विद्रोह, स्वस्थ आधुनिक दृष्टिकोण, नष्ट होते पारम्परिक तथ्यों की स्थापना और नारी जागृति आदि मुख्य रूप में लाई है।

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि कमल कुमार की कहानियों में सामाजिक निकष पर समाज का कोई पक्ष कोई बिन्दु लेखिका की दृष्टि से अछुता नहीं रहा है। आज संयुक्त परिवार व्यवस्था टूट रही है। पति-पत्नी, भाई-बहन, पिता-पुत्र, मां-पुत्र, के सहज सम्बन्धों की अपेक्षा औपचारिक दिखावा और स्वार्थ बढ़ रहा है। परिवार की इन समस्याओं पर विविध कोणों से लेखिका ने लिखा है और उसकी समस्याओं के हर पहलू को आंकने एवं दिखाने का प्रयास किया है। इनकी अनेक कहानियां परिवार कि अनेक समस्याओं को स्पष्ट करती है। लेखिका ने परिवार के संदर्भ हो या समाज के बदलते जीवन मूल्य अथवा राजनीतिक घटनाएं हों, प्रत्येक बिन्दु को अत्यंत सजगता के साथ पकड़ा है।

इस प्रकार कमल कुमार का अवधारणा समाज में इस तरह पढ़े-लिखे व्यक्ति का अपने ही देश में अपनी भाषा को बोलने पर अपमान एवं दूसरी भाषा को धारा-प्रवाह बोलने वालों का सम्मान होना अपने ही देश से भारतीयों को काट देता है और मैकाले की नीति के सफल होने का दम भरता है। अमर कहता है –"लार्ड मैकाले का षड्यंत्र था भारत में भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा द्वारा अपने ही खिलाफ कर दिये जाने का। वह षड्यंत्र आज पूरी तरह सफल हुआ है। तभी आप लोगों को मेरी बातें समझ में नहीं आतीं इसलिए क्योंकि हमारी अपनी सोच अपने विचारों को अंग्रेजीयत ले डुबी है।" यहां लेखिका ने भाषा को लेकर इस तरह की अंग्रेजी का गुणगान करते भारतीय अपनी मातृभाषा का अपमान करने से भी गुरेज नहीं करते और जो भारतीय मातृभाषा बोलते हैं उन्हें अनपढ़ या जाहिल समझते हैं। आज अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित हमारी पीढ़ी भारतीय भाषा में पढ़े हुए लोगों को हेय दृष्टि से देखते हैं। 'आवर्तन' उपन्यास में अमर डॉ. वर्मा को हिन्दी भाषा का महत्व बताता है तो वर्मा उसे व्यवहारिक धरातल पर हिन्दी के कारण उसे झेलने पड़े दंश की कहानी बयान करता है - "अब आप आदर्श की और सिद्धान्त की बात रहने दें गुप्ता जी, व्यवहार की बात कीजिए। क्या आपके और मेरे सोचने से

समाज और व्यवस्था बदल जायेगी। दूर क्यों जाते हैं आप, मेरी तरफ देख लो, रूक गयी न आखिर मेरी प्रमोशन। वो कल का लड़का मेरे सिर पर आकर बैठ गया और मैं कुछ नहीं कर सका। अब हमारे साथ तो जो हुआ से हुआ, कम से कम हमारे बच्चे तो वह उपेक्षा और तिरस्कार न पायें।" डॉ. वर्मा के साथ अंग्रेजी के कारण जो भेदभाव हुआ उस कारण उनकी प्रमोशन रोक दी गई और अंग्रेजी माध्यम से पढ़े लड़के को उस का बॉस बना दिया गया। इस प्रकार आप जिस भाषा को अधिक महत्व देंगे वहीं भाषा आप पर हावी होने लगेगा। इस प्रकार अपनी मातृभाषा से वंचित एवं दूसरी भाषा के अधीन होने की संभावना बढ़ जाती है।